मासिक पत्रिका जनवरी 2019

"सब काम धर्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करना चाहिए।"-महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश -1 (पंजी.)

ARYA SAMAJ KAILASH-GREATER KAILASH-I (Regd.) Regn. No. 3594/1968

New Delhi-110048 • Tel.: 29240762, 46678389 • E-mail : samajarya@yahoo.in • Web.: www.aryasamajgk1.org

An ISO 9001:2015 Certified Institution

विजय लखनपाल	विजय भाटिया	अमर सिंह पहल
प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष

पुनर्जन्म (REINCARNATION)

भारत में कभी नचिकेता ने यह प्रश्न उठाया था-हम सब जानते हैं कि प्राणी उत्पन्न होता है, कुछ काल तक जीवित रहकर मर जाता है। यह जीना और मरना क्या है? क्या जीवन कहीं से आने का द्वार है, और मरण कहीं से आकर, कुछ समय यहाँ रहकर, कहीं चले जाने का द्वार है? सदियाँ गुज़र गईं, यह प्रश्न कठोपनिषद् में नचिकेता ने स्वयं मृत्यु को सम्बोधित करके उठाया था। अगर हम यहाँ ही पैदा होते हैं, कहीं से आते नहीं, यहीं समाप्त हो जाते हैं, कहीं जाते नहीं, यही शरीर ही आदि है, यही अन्त है-चार्वाक के कथनानुसार '**भस्मी भूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः**'-यह देह समाप्त हो गया, तब यह जीने-मरने का झंझट अपने-आप जाता रहा-अगर यह बात ठीक है, तो जीवन के प्रति दृष्टिकोण एक तरह का हो जाता है; परन्तु अगर यह बात ठीक है कि हम इस जीवन में किसी दूसरी जगह से आते हैं, इस देह-रूपी चोले से कुछ देर काम लेकर किसी दूसरी जगह दूसरे चोले को धारण करने चले जाते हैं, हम इस देह के बनने पर जन्म नहीं लेते, देह के नष्ट हो जाने पर नष्ट नहीं हो जाते, तब जीवन के प्रति दृष्टिकोण दूसरा हो जाता है। क्योंकि इस प्रश्न का हल जीवन की सम्पूर्ण दार्शनिक विचारधारा को बदल देता है, इसलिए नचिकेता ने यह प्रश्न उठाया था-**येयं प्रेते विचिकित्सा, अस्तीत्येके नायमस्तीति चैके एतत् विद्यां अनुशिष्टस्त्वयाहम्**'-मैं तो यह जानना चाहता हूँ कि कई कहते हैं कि देह के अतिरिक्त आत्मा है, कई कहते हैं कि देह ही आत्मा है, न यह कहीं से आता है, न कहीं चला जाता है, देह ही जनमता, देह ही मरता है-यह समस्या है जिसे हर-कोई हल करना चाहता है, इसी समस्या का हल मैं जानना चाहता हूँ। सैकड़ों बरस गुज़र गये निचिकेता ने यम से-स्वयं मृत्यु से-उक्त सन्दर्भ में इसका हाल जानना चाहा था।

पुनर्जन्म के विचार का मनुष्य के चिन्तन में इतना ऊँचा तथा प्रबल स्थान है कि यह पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, पढ़े-बेपढ़े-दुनिया के हर क्षेत्र में पाया जाता है। वैसे तो, सारी दुनिया किसी विचार को मानती है-यह कह देने से कोई विचार सत्य नहीं हो जाता, परन्तु इतना ज़रूर है कि अगर किसी विचार को सारी दुनिया मानने लगे, तो इसका यह मतलब अवश्य निकलता है कि विश्व के नागरिकों को उस विचार से अपनी समस्याओं का अधिकतम हल निकलता प्रतीत होता है। संसार का दो-तिहाई हिस्सा इस सिद्धान्त को मानता रहा है।

पाश्चात्य जगत् के अनेक वैज्ञानिकों तथा विचारकों ने इस सिद्धान्त को स्वीकार किया है। उदाहरणार्थ, ब्रूनों (1548-1600)-जिसने कहा था कि सूर्य पृथ्वी के गिर्द नहीं घूमता, पृथ्वी सूर्य के गिर्द घूती हैं, पुनर्जन्म में विश्वास करता था। उसका कथन था कि जब हम कहते हैं कि कोई वस्तु नष्ट हो गई, तो वैज्ञानिक दृष्टि से हमारा अभिप्राय यह होता है कि उसकी जगह एक नवीन-वस्तु ने जन्म लिया है। ब्रूनो को इसलिए जीते-जी जला दिया गया क्योंकि वह कहता था कि सूर्य नहीं घूमता, पृथ्वी घूमती है।

अनेक पाश्चात्य लेखकों का कथन है कि पुनर्जन्म का विचार भारत में बहुत पीछे आया, पहले ईजिप्ट में इस विचार का श्रीगणेश हुआ। ऐसा कहने वाले भूल में हैं क्योंकि भारत के अर्वाचीन साहित्य में ही नहीं, वेदों में भी पुनर्जन्म का विचार बड़े स्पष्ट रूप में पाया जाता है। वेदों की प्राचीनता में पश्चिमी विद्वानों को भी सन्देह नहीं। वेदों में पुनर्जन्म के कुछ मन्त्र निम्न हैं-

असुनीते पुनरस्मासु चक्षुः पुनः प्राणम् इह नो धेहि भोगम्
ज्योक् पश्येम सूर्यम् उच्चरन्तम् अनुमते मृडया नः स्वस्ति।
पुनर्नो असुम् पृथिवी ददातु पुनर्द्यौः देवी पुनरन्तरिक्षम्
पुनर्नः सोमः तन्वं ददातु पुनः पूषा पथ्यां या स्वस्ति॥

ऋग्वेद (8.1.23.6, 7)

असुनीते! हे परमेश्वर–जो जीव को एक देह से दूसरे देह में ले जाता है–हमें फिर अगले जन्म में पुनः आँख, पुनः प्राण तथा पुनः अन्य भोग प्राप्त हों। हम पुनः सूर्य की ज्योति को उदय होता हुआ देखें–इत्यादि।

पुनर्मा एतु इन्द्रियम् पुनरात्मा द्रविणं ब्राह्मणं च। अथर्व (7, 6, 67, 1) वैसे तो भारत का सारा साहित्य पुनर्जन्म के विचार से ओत–प्रोत है, परन्तु ऋग्वेद तथा अथर्ववेद के कुछ मन्त्रों का उद्धरण इसलिए दिया है ताकि यह विचार कि भारत–भूमि में इस विचार का बीज ईजिप्ट से उड़कर यहाँ आ उगा–इस पर प्रकाश पड़े। भारत में इस विचार की जड़ इतनी मज़बूत थी कि अलैग्ज़ैंडर (356–323 ई. पू.) ने अपनी आँखों से कई हिन्दुओं को इसी विचार के कारण बड़े शान्त भाव से आग में अपने शरीर की आहुति देते देखा। सतीप्रथा में भी यही विचार काम कर रहा था। ज़बर्दस्ती किसी को जला डालना तथा अपने–आप आग में कूद पड़ना–इन दोनों में ज़मीन–आसमान का भेद है।

जैसे भौतिक जगत् का 'कारण–कार्य का नियम' (Law of Causation) आध्यात्मिक जगत् में 'कर्म का सिद्धान्त' कहा जा सकता है, वैसे ही भौतिक जगत् का 'ऊर्जा–संरक्षण' का नियम आध्यात्मिक जगत् में 'पुनर्जन्म' का सिद्धान्त कहा हा सकता है। विज्ञान का कहना है कि 'भौतिक द्रव्य' (Matter) तथा 'ऊर्जा' (Energy)- इन दोनों में से किसी को न तो अभाव से पैदा किया जा सकता है, न इनमें से किसी का नाश हो सकता है, इनका सिर्फ़ रूप बदल सकता है। उदाहरणार्थ, जब दीया जल रहा है, तब उसका तेल समाप्त होता दीखता है, परन्तु वह नष्ट नहीं हो रहा होता, धुएँ तथा कालिख में बदल रहा होता है। जो–जो बदलाहट हो रही होती है उस सबको पकड़कर तोल लिया जाय, तो तेल–सहित दीये में और धुएँ तथा कालिस–सहित दीये में माशाभर का भी फ़र्क नहीं होता। इस सिद्धान्त को सांख्य, वेदान्त तथा उपनिषद् ने 'सत्कार्यवाद' का नाम दिया है, इसी को विज्ञान ने 'ऊर्जा–संरक्षण' (Conservation of Energy) का नाम दिया है। इसी सिद्धान्त को आधार बनाकर सहस्त्रों वर्ष पूर्व गीता ने कहा था–

नासतो विद्यते भावः नाभावः विद्यते सतः

उभयोरपि दृष्टोन्तस्त्वनयोः तत्त्वदर्शिभिः।

गीता, द्वितीय अध्याय, 16

–अर्थात्, असत् का सत् नहीं होता, सत् का असत् नहीं होता। विद्वानों ने सत् तथा असत् के ओर–छोर को देखकर यही निर्णय किया है।

इसी सत्कार्यवाद (Conservation of Energy) के सिद्धान्त को आत्मा पर घटाकर गीता ने पुनर्जन्म के विषय में कहा है–

न त्वेवाहं जातु नासं न त्वं नेमे जनाधिपाः

न चैव न भविष्यामः सर्वे वयमतः परम्।

द्वितीय अध्याय, 12

–अर्थात्, ऐसा कभी नहीं था जब मैं नहीं था,ऐसा भी कभी नहीं था जब तू नहीं था, ऐसा भी कभी नहीं था जब युद्ध के लिए सामने खड़े हुए ये राजा–महाराजा नहीं थे, ऐसा कभी नहीं होगा जब तू, मैं या ये नहीं रहेंगे।

गीता ने कितने उत्तम शब्दों में आत्मा की जीवन–यात्रा का वर्णन किया है! जीवन तथा मृत्यु एक यात्रा है। इस यात्रा में पड़ाव के बाद पड़ाव, स्टेशन के बाद स्टेशन आते चले जाते हैं, जिनसे जिस पड़ाव या स्टेशन तक जाना है, वहाँ पहुँचकर वह उतर जाता है, मर नहीं जाता, अगले पड़ाव के लिए चल देता है; इस यात्रा में जो सह–यात्री होते हैं उनके साथ उतने समय का ही नाता रहता है जब तक यात्रा चलती रहती है, उसके बाद यात्री जिस नई यात्रा के लिए निकल पड़ता है उसमें उसे नये संगी–साथी मिल जाते हैं, पुराने भूल जाते हैं, यही जीवन तथा मृत्यु की कहानी है, अन्त तक जीवन–ही–जीवन है, मृत्यु सिर्फ़ पुनर्जन्म का नाम है। ■■

नींबू से लाभ

- नींबू के रस में शहद मिलाकर चेहरे पर लगाने (ब्लिचिंग) करने से चेहरे के कील–मुहासों में लाभ मिलेगा।
- जिन महिलाओं को अति रक्तस्राव (ओवर ब्लिडिंग) या रक्तार्श की समस्या हो, तो 1/2 नींबू निचोड़कर 1 कप पीने लायक गर्म दूध में डालकर दूध फटने से पहले ही पी जायें। यह प्रयोग सुबह खाली पेट या ऋतुकाल में कभी भी कर सकते हैं। इससे रक्तस्राव में तुरन्त लाभ होगा। यह चमत्कारिक प्रयोग है। यह प्रयोग 3–4 दिन करें। यदि पूर्ण लाभ न मिले तो चिकित्सक को अवश्य दिखायें।
- 10 मिली. नींबू रस में प्याज का रस 20 मिली. व इच्छानुसार शहद मिलाकर पीने से लीवर के रोग, मन्दाग्नि व अजीर्ण में लाभ होता है।
- नींबू के रस में थोड़ा अदरक व थोड़ा नमक मिलाकर भोजन के साथ लेने से भूख बढ़ती है। इससे पाचन क्रिया भी सुधरती है। ■■

साभार: आयुर्वेद सिद्धान्त रहस्य – आचार्य बालकृष्ण

जनवरी 2019 मास में साप्ताहिक सत्संग

दिनांक	वक्ता	विषय
06	आचार्य वीरेन्द्र विक्रम (9899908766)	शीतकाल आहार विहार तथा योगाभ्यास।
13	आचार्य राजू वैज्ञानिक (9968308558)	मकर संक्रांति का महत्त्व।
20	श्री देव आर्य (9210750329)	भजन
27	चलचित्र	

दिसम्बर मास में प्राप्त दान राशि:—

नाम	राशि	नाम	राशि	नाम	राशि
श्रीमती अमृत पॉल	17,500/-	श्रीमती वीना कश्यप	2,100/-	श्री जुगल किशोर खन्ना	1,100/-
M/s मुंजाल शोवा लि. C/o श्री योगेश मुंजाल	5,100/-	श्री एस.सी. गर्ग	2,100/-	श्री अमर सिंह पहल	1,000/-
श्रीमती मृदुला चौहान	5,100/-	M/s तनेजा फाउण्डेशन C/o श्री आर.के. तनेजा	2,100/-	श्री आर.के. सुमानी	1,000/-
श्री रोहन वीर	5,100/-	श्रीमती रेणु शर्मा	2,100/-	श्रीमती चन्दु सुमानी	1,000/-
श्रीमती सतीश सहाय	5,000/-	श्रीमती ज्योति शर्मा	2,000/-	श्री गौरव सुमानी	1,000/-
M/s अग्निहोत्री धर्मार्थ ट्रस्ट	5,000/-	डॉ. शशि छाबड़ा	2,000/-	श्री विजय मेहता	750/-
डॉ. एस.एस. यादव	5,000/-	श्री सुशील कुमार जौली	1,600/-	श्री के.के. कौल एवं परिवार	700/-
श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा	3,835/-	श्री दयानन्द मनचन्दा	1,100/-	श्री सुख सागर ढिंगरा	500/-
श्री रमन कुमार मेहता	3,100/-	श्रीमती रक्षा पुरी	1,100/-	श्री अजय कुमार कपूर	500/-
श्रीमती सुदर्शन बजाज	3,100/-	श्रीमती शिप्रा भाटिया	1,100/-	श्रीमती अर्चना विद्यालंकार	500/-
श्रीमती उषा मरवाह	3,100/-	श्री विजय लखनपाल	1,100/-	श्रीमती शशि मल्होत्रा	500/-
श्री प्रबोध चन्द्र गुप्ता	3,000/-	श्रीमती सुशीला गुलाटी	1,100/-	श्रीमती चन्द्रप्रभा खाण्डपुर	500/-
श्री एस.सी. सक्सेना	2,100/-	श्री अशोक चोपड़ा	1,100/-	श्री विजय सभरवाल	500/-
श्रीमती सुदेश चोपड़ा	2,100/-	श्री एस.एल. आनन्द	1,100/-	श्रीमती कान्ता	500/-
श्रीमती प्रेम शर्मा	2,100/-	सुश्री आदर्श भसीन	1,100/-	श्रीमती रेखा शर्मा	500/-
श्री राजीव भटनागर	2,100/-	श्रीमती सुधा गर्ग	1,100/-	श्रीमती कान्ता विद्यालंकार	500/-

दिसम्बर माह में पुरोहितों द्वारा एकत्रित धनराशि : ❖ श्री वेद कुमार वेदालंकार ₹ 1,100/-

वैदिक सैन्टर के लिए प्राप्त दान राशि :

❖ M/s सत्यम ऑटो कॉम्पोनेन्ट्स प्रा. लि. ₹ 2,50,000/- ❖ M/s हाइवे इण्डस्ट्रीज़ लि. ₹ 2,50,000/-

❖ श्री हरीश चन्द्र भारद्वाज ₹ 51,000/-

महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ-

❖ **लोहड़ी** का पर्व 13 जनवरी, 2019 (रविवार) को आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश-1 के परिसर में सायंकाल 6:00 से 7:00 बजे तक यज्ञ के पश्चात् मनाया जायेगा। जलपान व चाय का प्रबन्ध रहेगा। सब सदस्य सपरिवार आमंत्रित हैं।

❖ **माघ यज्ञ** - 14 जनवरी 2019 से 14 फरवरी 2019 तक विस्तृत कार्यक्रम पृष्ठ 4 पर देखें।

नव वर्ष की शुभकामनायें

आर्य समाज के सदस्यों तथा इस पत्रिका के पाठकों के लिए वर्ष 2019 की हार्दिक शुभकामनायें।

ओ३म्

आर्य समाज महिला सत्संग

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश-1, नई दिल्ली-110048

आप सभी को सूचित करते हुए हर्ष है कि प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी आर्य समाज महिला सत्संग-ग्रेटर कैलाश-1 का माघ यज्ञ **दिनांक 14 जनवरी 2019 (सोमवार)** से प्रारंम्भ होगा तथा माघ यज्ञ की पूर्णाहुति **14 फरवरी 2019 (बृहस्पतिवार)** को सम्पन्न होगी। कार्यक्रम इस प्रकार है-

दैनिक कार्यक्रम : प्रात: 10:30 से 12:00 बजे तक

प्रवचन	:	आचार्य वीरेन्द्र विक्रम	(14 जनवरी से 30 जनवरी 2019)
	:	आचार्य गणेश त्रिपाठी	(31 जनवरी से 14 फरवरी 2019)

पूर्णाहुति व समापन समारोह

दिनांक बृहस्पतिवार, 14 फरवरी 2019

प्रात: 10:00 से 1:15 बजे तक

अध्यक्षा	:	श्रीमती सन्तोष मुंजाल	
यज्ञ	:	ब्रह्मा आचार्य वीरेन्द्र विक्रम	प्रात: 10:00 बजे से 10:45 तक
भजन	:	श्री देव आर्य	दोपहर 10:45 बजे से 11:45 तक
प्रवचन	:	डॉ. उमा आर्य	प्रात: 11:45 बजे से 12:30 तक
प्रवचन	:	डा. महेश विद्यालंकार	दोपहर 12:30 बजे से 1:15 तक
धन्यवाद	:	दोपहर 1:15 बजे से 1:30 तक	
ऋषि लंगर	:	दोपहर 1:30 बजे से	

निवेदक

प्रधाना	उप-प्रधाना	मंत्राणी	कोषाध्यक्ष
संतोष रहेजा	**अमृत पॉल**	**प्रेम शर्मा**	**स्नेह वर्मा**